ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 196-197
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-II, Issues-20, YEAR- June-2021

'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो' नाटक में नारी यौन–उत्पीड़न

पल्लवी देवी
Email- - pallvibhagat090@gmail.com

Received- 05.06.2021, Revised- 09.06.2021, Accepted - 13.06.2021

सारांश : ***'उत्पीड़न' से अभिप्राय किसी को अवांछित तकलीफ या पीड़ा देने की क्रिया या भाव से समझा जाता है। उत्पीड़न के विविध रूपों में सबसे भयावह रूप है – यौन–उत्पीड़न। किसी के निजी अंगों को छूना या जबरदस्ती करना या शारीरिक संबंध बनाने के लिए दबाव डालने की क्रिया को यौन–उत्पीड़न माना गया है। समाज में यदि देखा जाए तो इस प्रकार के उत्पीड़न का सामना सबसे ज्यादा महिलाओं को करना पड़ रहा है, चाहे वह किसी भी आयु की हो। नारी को शारीरिक रूप से आघात पहुंचाना ही नारी यौन उत्पीड़न कहलाता है। उसके उत्पीड़न का कारण उसके नाते–रिश्तेदार या बाहर का कोई अन्य व्यक्ति भी हो सकता है। यौन–उत्पीड़न वर्तमान समाज की एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जिस पर गंभीर चिंतन–मनन करना जरूरी है, ताकि उसे यथासम्भव रोका जा सके।***

कुंजीभूत शब्द– अवांछित तकलीफ, उत्पीड़न, जबरदस्ती, रिश्तेदार।

विभा रानी ने 'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो' नाटक में युवतियों के साथ हो रहे यौन–उत्पीड़न जैसे ज्वलंत मुद्दे पर गंभीर चिंतन किया है। यह नाटक स्त्री–जीवन की भयंकर त्रासदी को दर्शाता है।

नाटक की प्रमुख पात्र अंकिता एक उच्चवर्गीय सुशिक्षित साधनसम्पन्न परिवार से है जो लगातार पंद्रह दिनों तक सगे पिता और भाई द्वारा यौन–शोषण का सामना करती है, वह कहती है – "पूरे पंद्रह दिनों से लगातार मैं ये भुगत रही हूँ। पापा जाते हैं तो भैया आ जाते हैं, भैया जाते हैं तो पापा ...।"[1] अपने रक्षकों को जब वह अपना भक्षक बनते देखती है तो वह स्तब्ध रह जाती है। उसे इतना गहरा आघात पहुँचता है कि स्वयं की दयनीय स्थिति के बारे में सोचते ही वह भयभीत होने लगती है। अपनी मित्र इशिता को अपनी बेबसी बताते हुए उससे कहती है कि, "I was so shocked ..." मैं सोच ही नहीं सकी कि मेरा बाप, मेरा भाई, जो मेरा अपना है, वो मेरे साथ ऐसा कुछ ...। यदि किसी अन्जाने आदमी ने ... तो मैं पूरी ताकत से उसका मुकाबला करती, चीखती, चिल्लाती, लेकिन ...।"[2]

अंकिता के पिता और भाई की अंधी हवस उसके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी बन जाती है, जिस कारण वह बहुत दुख और तकलीफ सहन करती है। यौन उत्पीड़न किसी भी स्त्री को सामान्य स्थिति में नहीं रहने देता और न ही उसे इस योग्य छोड़ता है कि वह अपनी अपबीती किसी को सुना सके। ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना उसे भीतर तक तोड़ देती है और समाज भी पूर्ण रूप से उसकी पीड़ा समझ पाने में सफल नहीं हो सकता है। इस संदर्भ में वह इशिता से कहती है,"... जिसने face किया होता है ... इशू ... उससे पूछो की उस समय उसकी क्या हालत होती है ... इशू ... आज ... पूरे पंद्रह दिनों बाद मेरे मुँह से आवाज निकली है, पहली बार मैं बोली हूँ ...।"[3]

यौन–शोषण व्यक्ति के स्वास्थ्य पर अनेक तरह से प्रभाव डालता है। वह उसके शारीरिक शोषण के साथ–साथ मानसिक शोषण का कारण भी बनता है। वह उसे शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों से अस्वस्थ कर देता है और साथ ही उसके आत्मसम्मान को भी छीन लेता है – "मौत तो सिर्फ शरीर की होती है, बलात्कार तो अस्मिता को भी चूर–चूर कर देता है और आत्मसम्मान को भी।"[4]

अंकिता भी अपने जीवन में घटित हो चुकी ऐसी दुखद घटना की वजह से अपना आत्मसम्मान खो बैठती है। वह कॉलेज जाने से भी डरने लगती है कि लोग उसका अपमान करेंगे और मजाक उड़ाएंगे, तभी जब सुजीत और इशिता उसे घर से बाहर निकलकर समाज का सामना करने हेतु प्रेरित करते हैं तो वह उन्हें उत्तर देते हुए कहती है कि – "नहीं जा पाऊँगी मैं। ... मुझे समझने की कोशिश करो प्लीज! लोग हँसेंगे, ताने कसेंगे, अजीब नजरों से देखेंगे। मेरे अंदर इतनी हिम्मत नहीं है कि मैं इन सबका सामना कर सकूँ।"[5] अंकिता के जीवन में निराशा का अंधेरा इतना घना हो जाता है कि वह उससे बाहर आने की हिम्मत अकेले नहीं जुटा पाती किन्तु जब उसे अपनी माँ, मित्र इशिता और उसके माता–पिता, सुजीत और अमन का साथ मिलता है तो वह अपने अंधकारमय जीवन में दोबारा से रोशनी लाने में सफल हो पाती है। पिता और भाई को सजा दिलवाकर अपने भीतर शांति अनुभव करती है।

इस प्रकार एक पिता और भाई का अपनी ही बेटी और बहन को शारीरिक रूप से भोगना बहुत ही अमानवीय और अनैतिक है। आधुनिक समय में खून के रिश्ते भी इतने यांत्रिक हो गए हैं कि अपने आत्मीय सम्बन्धों के प्रति उनकी दृष्टि पूर्णता धुंधली हो चुकी है। इसी कारण स्त्री न ही घर की चारदीवारी में और न ही उस चारदीवारी के बाहर खुद को सुरक्षित महसूस कर पाने में सफल हो पा रही है। समाज के सुसंस्कृत और ऊँचे सुशिक्षित परिवारों में रहने वाली नारी खुद को सुरक्षित समझती हुई इस भ्रम में रहती है कि अपने परिवार के पुरुष सदस्यों से उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं है, जबकि यह भ्रम केवल भ्रम ही है – "लड़कियों के लिए यह कल्पना करना भी मुश्किल होता है कि जिस घर में

शोध अध्येता–(एम.फिल्.) हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, (जम्मू एण्ड कश्मीर) भारत

अनुरूपी लेखक

ASVP PIF-8.500 /ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-II, Issues-20, YEAR- June-2021

वे पली–बढ़ी है, वह ही उन्हें निगलने को आतुर हैं।"[6]

वर्तमान समय में सभ्य परिवारों में भी नासमझी, अनैतिकता और अमानवीयता इस हद तक फैल चुकी है कि एक स्त्री कहीं भी महफूज़ नहीं है। आधुनिकता के इस दौर में समाज में चाहे कितना भी विकास क्यों न हुआ हो परन्तु स्त्रियों के जीवन–विकास में यौन–उत्पीड़न सबसे बड़ी रूकावट है।

परिवार सहित समस्त समाज का यह परम कर्तव्य बनता है कि वह इस प्रकार की निंदनीय घटनाओं को समाज में घटित होने से रोकें और उन स्त्रियों को हिम्मत दें जो ऐसी घटनाओं का शिकार हो रही हैं। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि शोषित स्त्री साहस करके स्वयं आगे आए और अपने जीवन को प्रताड़ना तथा तिरस्कार की कैद से मुक्त करवाने के नवीन मार्ग खोज निकालें। लेखिका ने नारी को इस नाटक के माध्यम से अत्याचारों का निडरतापूर्वक सामना करने हेतु प्रेरित किया है।

आज प्रायः हम देख रहे हैं कि नारी यौन–उत्पीड़न की समस्या समाज में एक भयंकर रूप धारण कर चुकी है और अधिकतर रूप से यह शोषण उसके करीबी व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है, जिसके प्रति लेखिका समाज को सचेत करती हुई इस घृणाजनक अपराध के विरुद्ध खड़ा होने की प्रेरणा देती हैं। ऐसे अपराधों से समाज को मुक्त करने के लिए शोषित नारी को स्वयं और उसके साथ समाज और परिवार को एकजुट होकर आगे आना होगा जैसे अंकिता के लिए उसकी माँ, मित्र सभी मिलकर आगे आए। इस प्रकार इनका नाटक केवल यौन–उत्पीड़न को ही नहीं दर्शाता अपितु उसके समाधान की ओर संकेत करते हुए नारी की वर्तमान स्थिति को भी उजागर करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विभा रानी, अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो, पृ. 62.
2. वही, वही, पृ. 61–62.
3. वही, वही, पृ. 62–63.
4. अरविंद जैन, औरत होने की सजा, पृ. 91.
5. विभा रानी, अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो, पृ. 70.
6. क्षमा शर्मा, स्त्री का समय, पृ. 19.

*****